समर्पण - एक अग्निपथ

➢➢ समर्पण

➳ _ ➳ वो जहां रखे... जैसा रखे... जिस परिस्थिति में रखे...

→ कोई तर्क वितर्क नहीं

- ये ऐसा क्यों... ये वैसा क्यों ?

➳ _ ➳ सीख सीख... झुक झुक... मर मर...

→ प्रतिपल परीक्षा... प्रतिपल सहन करना है

→ **हर परिस्थिति को प्रेम से स्वीकार करना**

➳ _ ➳ समर्पण स्थिति का नाम है

→ इसका सम्बन्ध श्वेत वस्त्रों और बैज से नहीं

➳ _ ➳ मैं पन का सम्पूरण त्याग

→ मेरा नाम

→ मेरा फोटो

➢➢ अष्ट समर्पण

➳ _ ➳ तन का समर्पण

→ यह तन यज्ञ में समर्पित कर देने के बाद... सांसारिक तृष्णाओ, वासनाओं की पूर्ति के लिए यह देह नहीं है

➳ _ ➳ मन के संकल्पों का समर्पण

→ एक एक संकल्प का बाप को भोग लगाओ

➳ _ ➳ धन का समर्पण

→ जो कुछ आपके पास है, वो उसी का दिया हुआ है

➳ _ ➳ बुधी का समर्पण

→ लोकिक / अलोकिक ज्ञान के अंहकार का समर्पण

- इससे विशेषताएं और बढेंगी

➳ _ ➳ संस्कारों का समर्पण

→ संस्कार परिवर्तन एक क्रान्ति है

- **क्रान्ति में विरोध चाहिए / बगावत चाहिए**
- अपने ही संस्कारों के प्रति बागी बन जाना
- युद्ध स्तर पर कार्य किया जाना चाहिए
- जैसे 1857 की क्रान्ति में पूरी जनता सरकार के विरोध में कड़ी हो गयी... ऐसे ही आपको स्वयं स्वयं के विरोध में खड़े हो जाना है

➳ _ ➳ समय का समर्पण

→ हर सेकंड सिर्फ उसके लिए

➳ _ ➳ कर्म और कर्म के परिणाम का समर्पण

→ सेवा की और बाबा को समर्पण

➳ _ ➳ संबधो का समर्पण

→ समबंधो में लोकिकता नहीं होनी चाहिए

→ किसी से विशेष स्नेह भी नहीं होना चाहिए

→ सेवा प्रति सम्बन्ध रखना है बस

- पर सेवा प्रति सम्बन्ध की आड़ में स्वयं के लगाव को ढकना नहीं हैं